विद्या भवन बालिका विद्यापीठ, लखीसर

कक्षा-षष्ठ विषय-संस्कृत

विषय-शिक्षिका – भारती कुमारी

दिनांक- 25-05-2020

प्यारे बच्चों आज हम नई पुस्तक दिव्य वाणी पुस्तक से संस्कृत में सरस्वती वंदना को पढ़ेंगे और उसका अर्थ जानेंगे।

सरस्वती नमस्तुभयं वरदे कामरुपिणी ।

विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु में सदा।।

श्लोक का हिंदी अर्थ है – माँ सरस्वती ! मैं आपके चरणों में विद्या आरम्भ करने से पूर्व प्रणाम करता हूँ क्योंकि आप समस्त प्रकार के कार्यों की सिद्धि प्रदान करने वाली है । आप मेरी प्रार्थना को स्वीकार कर मुझे वरदान प्रदान करें जिससे मेरी सब

प्रकार की सिद्धि सदैव पूर्ण हो ।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव

त्वमेव बन्धुः च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव

त्वमेव सर्वम मम् देव – देव । ।

अर्थ - तुम ही माता हो, तुम ही पिता हो, तुम ही बन्धु हो और तुम ही मित्र हो ।

तुम ही विद्या हो, तुम ही धन हो । तुम ही मेरे सब कुछ हो ।

तुम ही देवों के देवता हो ।

नमामि ईश्वरं प्रातः, नमामि जनकं तथा ।

नमामि मातरं पूज्याम्, नमामि शिक्षकांस्तथा ।

अर्थ - मैं प्रातः ईश्वर को प्रणाम करता हूं । मैं अपने पूज्य पिताजी को तथा पूज्य माता जी को प्रणाम करता हूं ।

और मैं अपने गुरुजनों को प्रणाम करता हूं ।

नोट - इसे कॉपी में लिखकर याद करें ।